अन्धं तम: प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्याया ँ् रता:॥

(ईशावास्योपनिषद् : ९)

जो मनुष्य केवल अविद्या की उपासना करते हैं, वे घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं और जो केवल विद्या की उपासना करते हैं, वे उससे भी अधिक अन्धकार में प्रवेश करते हैं।

पूर्व-अंक से आगे :

सांसारिक अस्तित्व के दु:ख

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

एक सांसारिक मनुष्य सदा दु:ख में डूबा रहता है। वह कुछ वस्तु, थोड़ा धन, थोड़ी शक्ति, थोड़ी स्थिति आदि प्राप्त करने के लिए सदैव संघर्षरत रहता है और सदैव चिन्तित रहता है कि ये उसे मिलेंगी या नहीं ? यहाँ तक कि जब वह इन चीजों को वास्तव में प्राप्त कर लेता है, तो भी उसे चिन्ता रहती है कि कहीं वह इन्हें खो न दे। पैसा कमाने में कष्ट है। इसको सँभालने में और अधिक कष्ट है। जब यह कम हो जाता है, तो यह और अधिक दु:खदायी हो जाता है। जब यह खो जाता है, तो एक क्षण के लिए उस परिदृश्य की कल्पना कीजिए कि यह मनुष्य को कितना अधिक दु:ख देता है। इसलिए धन को त्याग दो और आनन्दपूर्ण आत्मा में विश्राम करो। प्रकाश की उपस्थिति में आप अन्धकार को नहीं देख सकते। विषय-सुख की उपस्थिति में आत्मानन्द प्रकट नहीं हो सकता। विषय-सुख और आत्मानन्द एक ही प्याले में एक ही समय में एक-साथ नहीं रह सकते। यह बिलकुल असम्भव है। लोग विषय-सुख को नहीं त्यागना चाहते हैं। वे अपने हृदय में सच्चे वैराग्य का विकास नहीं करना चाहते हैं। वे बस बड़ी-बड़ी बातें करते हैं।

हालाँकि मनुष्य जानता है कि वह किसी भी क्षण मृत्यु को प्राप्त हो सकता है, किन्तु फिर भी यह सोचता है कि वह सदा जीवित रहेगा। स्वयं को मृत्यु तक माया के जंजाल में फँसाये रखना सीधी-सीधी मूर्खता है। जो पत्नी, सम्पत्ति और बच्चों में आसक्त है, वह आध्यात्मिक पथ में तनिक भी लाभान्वित नहीं होता।

एक अविवाहित जो सिर से पैर तक वासना से परिपूर्ण है, सोचता है कि उसकी पत्नी नहीं है, इस कारण वह दुर्भाग्यशाली है। जब कि एक गृहस्थ जो संसारिक जीवन से थक गया है, सोचता है कि पत्नी और बच्चे उसके आध्यात्मिक मार्ग में सबसे बड़ी बाधा हैं।

नाम और प्रसिद्धि की कामना

मनुष्य के लिए पत्नी, पुत्र, सम्पत्ति तथा सब-कुछ छोड़ सकना आसान है; किन्तु नाम और प्रसिद्धि को छोड़ना अत्यन्त कठिन है। नाम और प्रसिद्धि का स्थापित होना प्रतिष्ठा कहलाता है। यह भगवद्-साक्षात्कार में महान् बाधा है। यह अन्त में पतन लाती है। यह साधक को आध्यात्मिक पथ में आगे नहीं बढ़ने देती। वह मान-सम्मान का दास बन जाता है। जैसे ही वह शुद्धता तथा नैतिक उन्नति प्राप्त करता है, अज्ञानी लोग उसके पास दौड़े चले आते हैं और उसे सम्मान देते हैं तथा प्रणाम करते हैं, जिससे वह घमण्ड से फूल जाता है।

वह सोचता है कि वह महान् महात्मा है। वह अपने प्रशंसकों का दास बन जाता है। वह अपने धीरे-धीरे हो रहे पतन पर ध्यान नहीं दे पाता। जिस क्षण से वह गृहस्थों से उन्मुक्त रूप से मिलता है, उसके बाद जो-कुछ भी उसने अपनी आठ या दश वर्षों की

साधना से प्राप्त किया था, वह खो बैठता है। अब वह लोगों को प्रभावित नहीं कर पाता। उसके प्रशंसक भी उसे छोड़ देते हैं, क्योंकि अब उन्हें उसकी संगत में सच्ची शान्ति अथवा आध्यात्मिक प्रभाव नहीं प्राप्त होता।

लोग कल्पना करते हैं कि उस महात्मा को सिद्धियाँ प्राप्त हो गयी हैं तथा वे उसकी कृपा से बच्चे, प्रचुर धन-सम्पदा और रोगों के उन्मूलन के लिए हिमालय की जड़ी-बूटियाँ प्राप्त कर सकेंगे तथा अपने शरीर को स्वस्थ और बलवान् बना सकेंगे। वे सदैव किसी महात्मा से किसी स्वार्थ अथवा गुप्त उद्देश्य हेतु सम्पर्क करते हैं। साधक गलत सम्पर्क के कारण अपने विवेक और वैराग्य को गँवा देता है। मोह और कामना उसके मन में जन्म ले लेते हैं। इसलिए आपको सदैव अपने-आपको छुपा कर रखना चाहिए। कोई भी न जाने कि आप किस प्रकार की साधना करते हैं। आपको अपनी सिद्धियों को कभी भी प्रदर्शित नहीं करना चाहिए। आपको बहुत विनम्र होना चाहिए। आपको एकदम साधारण व्यक्ति की भाँति रहना चाहिए। आपको गृहस्थों से मँहगे उपहार नहीं लेने चाहिए। आप उपहार देने वालों के बुरे विचारों से प्रभावित हो जायेंगे। आपको कभी भी ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि आप इस या उस व्यक्ति से अधिक श्रेष्ठ हैं। आपको अन्यों का अनादर नहीं करना चाहिए। आपको अन्यों के साथ सम्मानपूर्वक तथा सोच-विचार कर व्यवहार करना चाहिए, मात्र तभी सम्मान स्वयं आयेगा। आपको मान-सम्मान, नाम-प्रसिद्धि को गोबर तथा विष की भाँति मानना चाहिए और अनादर, असम्मान को स्वर्ण के हार की भाँति गले लगाना चाहिए। तभी आप लक्ष्य तक सुरक्षित पहुँचेंगे।

यह परेशानी क्यों?

आश्रमों का निर्माण करने तथा शिष्य बनाने से साधक का पतन हो जाता है। ये ईश्वर-साक्षात्कार में बाधाएँ हैं। साधक अन्य प्रकार का गृहस्थ बन जाता है। उसके भीतर संस्थागत अहंकार का विकास हो जाता है। उसे अपने आश्रम तथा शिष्यों से मोह हो जाता है। अब उसे आश्रम चलाने की, मासिक पत्रिका निकालने की चिन्ता-आकुलता होने लगती है। उसकी दास्य मानसिकता हो जाती है। जब वह मरणासन्न स्थिति में होता है, तब भी उसके मन में आश्रम घूमता रहता है।

कुछ सम्माननीय आश्रमों का संचालन आध्यात्मिक बुद्धि सम्पन्न प्रमुख जनों द्वारा जब तक वे जीवित रहते हैं, अत्यन्त सुचारु रूप से होता रहता है। जब वे मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, तो जो शिष्य छुद्र बुद्धि वाले होते हैं, वे आपस में न्यायालय में संघर्ष करते हैं। आपने ऐसे कई मामले देखें होंगे। आश्रम युद्ध-स्थल बन गये हैं। आश्रम के स्वामी दानदाताओं की चापलूसी करते हैं और अक्सर उनसे दान हेतु प्रार्थना करते रहते हैं। जब किसी का मन धन कमाने में तथा आश्रम के विकास में लगा हो, तो उसके मन में ईश्वर के विचार कैसे रह सकते हैं? जिन्होंने आश्रम चला रखे हैं, वे कहते हैंह्लह्ल''हम कई प्रकार से लोगों की भलाई करते हैं। हमारे यहाँ नित्य धार्मिक कक्षाएँ लगती हैं। हम गरीबों को भोजन कराते हैं। हम धार्मिक विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देते हैं।''

यह बिलकुल सत्य है कि वह आश्रम जिसका संचालन नि:स्वार्थ योगी अथवा साक्षात्कार-प्राप्त आत्मा अथवा जीवन्मुक्त द्वारा किया जा रहा हो, वह आध्यात्मिकता का जीवन्त केन्द्र होता है। यह हजारों लोगों का आध्यात्मिक उत्थान करता है। ऐसे केन्द्रों की संसार के प्रत्येक भाग में आवश्यकता है। ऐसे आश्रम देश को अत्यधिक आध्यात्मिक लाभ प्रदान करते हैं। लेकिन ऐसे आध्यात्मिक आश्रम जिनके प्रमुख भी आध्यात्मिक हों, आजकल अत्यन्त दुर्लभ हैं। आश्रमों में अनेक प्रकार से धन एकत्रित किया जाता है। इसमें से कुछ तो उपयोगी कार्यों में व्यय किया किया जाता है, शेष धन का प्रयोग आश्रम के प्रमुखों तथा उनके प्रिय शिष्यों के ऐशो-आराम पर व्यय किया जाता है।

आश्रम के संस्थापक कुछ समय बाद अनजाने ही पूजा-पाठ के दास बन जाते हैं। माया अनेक प्रकार से कार्य करती है। ये लोग बड़े उत्सुक रहते हैं कि लोग उनके चरणामृत का पान करें। जो ऐसा भाव रखता हो कि उसकी पूजा अवतार की भाँति की जानी चाहिए, वह लोगों की सेवा कैसे कर सकता है? आश्रम के कार्यकर्ता तुच्छ बुद्धि वाले होते हैं। वे आपस में झगड़ा करते हैं और आश्रम के वातावरण को बिगाड़ देते हैं। लेकिन तब आश्रम में शान्ति कैसे रह सकती है? बाहर से आने वाले आश्रम-दर्शन हेतु आ कर वहाँ शान्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

आश्रम के संस्थापकों को बाहर से भिक्षा प्राप्त करके जीवन यापन करना चाहिए। उन्हें ऋषिकेश के स्वर्गीय बाबा काली कमली वाले जो स्वयं आश्रम के लिए अपने शिर पर जल का बर्तन ले कर आते थे और स्वयं बाहर भिक्षा माँग कर जीवन यापन करते थे, की भाँति पूर्ण आत्म-त्याग, आदर्श सादगी पूर्ण जीवन बिताना चाहिए। मात्र ऐसे लोग ही लोगों का सच्चा आध्यात्मिक कल्याण कर सकते हैं। आश्रम के संस्थापकों को कभी दान हेतु याचना नहीं करनी चाहिए। यह संन्यास हेतु भी अपयश लाता है। यह सम्मानपूर्वक भीख माँगने का एक प्रकार है। भीख माँगने की आदत बुद्धि की सूक्ष्मता तथा सूक्ष्मग्राही प्रकृति को नष्ट कर देती है और जो जल्दी-जल्दी दान हेतु आग्रह करते हैं, उन्हें पता ही नहीं रहता कि वे क्या कर रहे हैं।

आश्रम हेतु अच्छे कार्यकर्ता प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। जब आपके पास न तो कार्यकर्ता हैं, न ही धन है, न ही आध्यात्मिक बल है, तो फिर आप आश्रम क्यों बनाना चाहते हैं? शान्त रहिए। ध्यान कीजिए और अपना शीघ्र विकास कीजिए। अपने काम से काम रखिए। पहले अपना सुधार कीजिए। जब आप स्वयं ही अँधेरे में घिरे हैं, जब आप स्वयं ही अन्धे हैं, तो आप अन्यों की सहायता कैसे करेंगे? एक अन्धा दूसरे अन्धे को कैसे रास्ता दिखा सकता है? दोनों की गहरे गड्ढे में गिर जायेंगे और पैर तुड़ा बैठेंगे।

सामान्यतया साधक अपनी साधना के प्रारम्भ में बड़ा ही उत्साही रहता है। वह उत्साह से पूर्ण रहता है। वह बड़ी रुचि लेता है। वह अत्यन्त शीघ्र अच्छे परिणाम प्राप्त करना चाहता है। लेकिन जब उसे ये परिणाम उसके द्वारा चाहे गये समय में नहीं प्राप्त होते, तो वह निरुत्साहित हो जाता है। वह अपनी रुचि खो देता है और अपने प्रयत्न से डगमगा जाता है। वह अपनी साधना पूर्णतया छोड़ देता है। वह अपनी साधना की सफलता में आस्था खो बैठता है। (क्रमशः)

(अनुवादिका : शिवानन्द राधिका अशोक)

वैदिक जीवन-दर्शन

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उस दिव्य सत्ता को श्रद्धापूर्ण प्रणाम करते हैं, जिसके दिव्य सान्निध्य में हम इस समय एकत्रित हुए हैं और जिसकी विद्यमानता में आप सब अपने सम्पूर्ण जीवन के प्रत्येक पल में निवास करते हैंह्लह्लभले ही आप इसे जानें अथवा न जानें, समझें या न समझें, यह एक अपरिवर्तनीय तथ्य है कि आप वास्तव में ही अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में ईश्वर की उपस्थिति में ही जीते हैं।

वैदिक दृष्टिकोण और वैदिक जीवन-दर्शन व्यक्ति को निर्भीक बनाता है। यह मानव की शाश्वत प्रकृति को, उसके अनश्वर दिव्य स्वरूप को नाम-रूपों से परे, देश-काल से अतीत, जन्म-मरण से रहित, परम, अज, अनादि, अनश्वर, शाश्वत, अपरिवर्तनशील स्वरूप को समझा देता है।

इस दर्शन में स्थित हो कर, इस सत्य को स्वीकार कर लेने पर सनातन वैदिक जीवन-दर्शन का अनुयायी निर्भीक हो जाता है। ऐसा व्यक्ति मृत्यु पर हँसता है, वह जानता है कि मृत्यु का उसके लिए कोई अर्थ नहीं है। हाड़-मांस के इस भौतिक पिंजरे, जिसमें यह कुछ समय के लिए अस्थाई रूप से कैद है, उसके लिए यह लागू होता है। किन्तु वह सदैव तैयार हैह्लह्ल''मृत्यु आती है तो आ जाये। मुझे चिन्ता-भय नहीं है। इसका स्वागत है। मैं प्रसन्नतापूर्वक देह के इस बन्धन को त्यागने को तैयार हूँ।''

अत: जो स्वयं अपने प्रति वैदिक दर्शन में स्थित है, उपनिषदिक-दर्शन में स्थिर है, उस व्यक्ति का अन्तरतम निर्भीक है। किन्तु इसके साथ ही वह इस जीवन के चरम बिन्दु तक इसका पूर्णतया सदुपयोग करने के लिए, स्वयं अपनी सर्वोच्च भलाई के लिए तथा अन्य सबकी भलाई के लिए सदा तत्पर रहता हैह्लह्ल''हम यहाँ मात्र आने-जाने वाले परिवर्तनशील यात्री हैं। अत: हमें ईश्वर की इस सृष्टि, जिसमें हम रह रहे हैं, में सबका भला करना चाहिए।''

अत: उनमें केवल एक यही महान् लक्ष्य, सर्वोच्च उद्देश्य और एकमात्र उत्कृष्ट विचार रहता हैह्लह्ल''मैं अपने चतुर्दिक् प्राणी मात्र के लिए अधिकाधिक लाभ और भलाई का केन्द्र बनूँ।'' यही सच्चा आदर्श वैदिक जीवन हैह्लह्लइस जगत् में रहना और जीना अपने लिए नहीं, अन्य किसी कारण से नहीं, बस केवल सर्वहिताय और स्वयं अपनी धन्यता हेतु ही।

वैदिक दृष्टिकोण का अनुयायी जीवन को एक महान् उपहार के रूप में स्वीकार करता है। वह इसका मूल्य समझता है और इसका सर्वोच्च भले की उपलब्धि और सबकी अधिकाधिक भलाई के लिए उपयोग करना चाहता है। अत: वह सन्तुलित और अत्यन्त उपयोगी व्यावहारिकता, जो उच्चतम सर्वातीत आदर्श को लिये हुए होह्लह्लअर्थात् पूर्णतया

निर्भीक, मृत्यु पर हँसते हुए, यह समझते हुए कि इसका कोई अर्थ नहीं है, किन्तु साथ ही इसके मूल्य को पहचानते हुए, इसकी संक्षिप्तता को जानते हुए, जीवन जीता है।

''मैं जानता हूँ कि सब-कुछ अल्पकालिक और अस्थाई है। मुझे ज्ञात है कि मेरे सभी सम्बन्ध नाशवान्, क्षणिक हैं। तो भी जब तक वह हैं, उनका अर्थ है। वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं, अनमोल हैं। इसलिए मैं जीवन को दोनों हाथों से कस के पकड़ कर रखूँगा। मैं प्रसन्नतापूर्वक हृदय से जीवन को 'हाँ' कहूँगा और भगवान् द्वारा दी गयी प्रत्येक क्षमता का सर्वोत्तम उपयोग करूँगाह्हमन में केवल यह भाव रखते हुए कि सबका हित हो, सबका भला हो, मनुष्य के माध्यम से ही भगवान् की सेवा हो; और यह मानते हुए कि समस्त प्राणी उस परम पिता परमात्मा की, उस विराट् पुरुष की अभिव्यक्ति हैं।''

इस प्रकार यह एकदम अहं विहीन वास्तविकता और भावातीत आदर्शवाद की सर्वोच्च उड़ानह्हदोनों का एक विलक्षण, अविश्वसनीय संयोजन है, किन्तु साथ ही अत्यन्त अद्भुत और सुन्दर सम्मिलन भी है जिसमें न जीवन की चिन्ता होती है, न मृत्यु का भय, क्योंकि ज्ञात होता है कि दोनों एक ही हैं, सदैव जीवन-यात्रा में आगे बढ़ने को तत्पर, इसे समाप्त करने को उद्यत, किन्तु भली-भाँति यह जानते हुए कि सभी इतने सौभाग्यशाली नहीं हैं कि ऐसी अन्तर्दृष्टि प्राप्त हो, ऐसा उच्च दृष्टिकोण उपलब्ध हो; अत: इस जगत् की प्रतिभासित व्यावहारिक सत्ता को, इस प्रपंच को पहचानते हुए, जो अभी भी अविद्या में हैं, माया में और अज्ञान में हैं, उनके प्रति अत्यन्त करुणापूर्वक रह कर जीवन का खेल दक्षता से खेलता रहता हैह्हसेवा का, सान्त्वना का, प्रसन्नता और शान्ति का स्रोत बन कर, प्रेम और मित्रता का साधन बन कर, देने और बाँटने का स्रोत बन कर, उत्साह का, सत्यं, शुभं, सुन्दरम् का स्रोत और दिव्यता का स्रोत बन कर, क्योंकि आप सब दिव्य ही हैं।

अत: वैदिक दर्शन और अन्तर्दृष्टि हमें निर्भीक हो कर जीवन जीने का विशेषाधिकार प्रदान करती है, क्योंकि हम जान जाते हैं कि हम सदा मुक्त हैं; किन्तु इसके साथ ही विश्व-सद्भावना और प्रत्येक की प्रसन्नता के लिए अथक निष्काम सेवा और त्याग भावना से परिपूर्ण लाभान्वित जीवन जीते हैं। वैदिक ऋषियों की परम अनुभूति का सही मूल्यांकन करने का यह अद्भुत और सुन्दर लाभ है।

आप सब इस ज्ञान और दृष्टिकोण से पूर्ण, इस अन्तर्ज्योति और अन्तर्दृष्टि से परिपूर्ण जीवन जियें और ईश्वर की इस सृष्टि को समृद्ध बनायें, जिन्हें भी परमात्मा आपके सम्पर्क में लाते हैं, उनके जीवन को समृद्ध करें। अन्धकार में प्रकाश बन कर जियें! ईश-कृपा का आपमें निवास हो !

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

आत्मा माने मैं स्वयं। ऐसा नहीं है कि मेरे अन्दर आत्मा है, मैं स्वयं आत्मा हूँ। मैं पुरुष नहीं हूँ। मेरा रूप न ऐसा है, न वैसा है। जब मैं शरीर ही नहीं हूँ, तो रूप का प्रश्न ही कहाँ उठता है? मैं मन और बुद्धि से परे, नाम और रूप से परे आत्मा हूँ। **स्वामी चिदानन्द**

पूर्व-अंक से आगे :

जीव और ब्रह्म

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

अनेक वस्तुएँ, एक वस्तु कैसे हो सकती हैं? यह एक अन्य प्रश्न है। '**सर्वं ब्रह्म**'ह्लह्लसब ब्रह्म है। एक बहुल अनेकता (multitudinous variety) एकाकी (अद्वितीय) अस्तित्व में सम्मिलित होती प्रतीत होती है। इसे समझना कुछ कठिन-सा है, क्योंकि अनेक वस्तुओं की समानता एक के साथ करना कभी नहीं देखा गया। बहुल पदार्थ बहुत हैं और एक पदार्थ एक ही है। ब्रह्माण्ड की प्रचुर विभिन्नता विषयों के पृथक्-पृथक् गुणों के कारण दृष्टिगत होती है। फिर यह भेद का चिह्न (differentia) क्यों? अद्वितीय, एकाकी सत्य के साथ जब हम समस्त पदार्थों का एकीकरण करने का प्रयास करते हैं, तो भेद का लक्षण कहाँ लुप्त हो जाता है? यहाँ पुन: हमें भाग-त्याग लक्षण की विधि से संज्ञान की प्रक्रिया में कुछ त्याग करना होगा और कुछ ग्रहण करना होगा।

लक्षणों के लय की विधि से जैसे आप उस व्यक्ति का ज्ञान करते हैं जो पहले वहाँ था और अब यहाँ है, वैसे ही अतिरिक्त लक्षणों को हटा कर विविध रूप ब्रह्माण्ड का ज्ञान एक सत्ता से होता है; क्योंकि विविधता की आकृति के लिए न तो लक्षण अनिवार्य है और न ही वे लक्षण विविधता का सार हैं। वे तो विशेष के प्रति आकस्मिक संयोग मात्र हैं। आकस्मिक संयोग का त्याग करना होगा और जो अनिवार्य है, उसे स्वीकार करना होगा। ब्रह्म सार है; इसलिए इसका समीकरण सार से ही हो सकता है। सार स्वरूप ब्रह्म का एकीकरण भौतिक विषयों की आकस्मिक संयोगवश प्राप्त उपाधियों से नहीं हो सकता। संसार के पदार्थों में नाम और रूप का जो वैधानिक (आकृतिक) रूप हम देखते हैं, वह मात्र संयोग है; क्योंकि उनकी सत्ता देश-काल की अवधि पर्यन्त ही सीमित है। जैसा कि प्रथम मन्त्र में निर्देश था : ''**यच्चान्यत् त्रिकालातीतं तदप्योंकार एव**''ह्लह्लअर्थात् ब्रह्म त्रिकालातीत है और इसीलिए सब दिशाओं में व्याप्त हो कर भी उससे अतीत है। इसी कारण से यह देश-काल के लक्षणों से अयुक्त है। उसमें देश-काल के लक्षण नहीं हैं।

देश और काल के अनिवार्य लक्षण क्या हैं? वे हैंह्लह्लविभेद और रूप (आकृति) अर्थात् परिभाषा और उपाधि आदि से एक वस्तु का दूसरी वस्तु से भेद हो सकता है। 'विशेष' कहे जाने वाले कतिपय लक्षणों से युक्त किसी पदार्थ को देखने पर हम 'विशेष' के वर्ग को दूसरे वर्ग से भिन्न समझने लगते हैं और उसे स्वतन्त्र सत्ता मान बैठते हैं। इन विशेषों का निराकरण कर दिया जाये, तो ये अस्तित्व भी नष्ट हो जायेंगे। जल को हम बूँद के रूप में देखते हैं। एक बूँद दूसरी बूँद से पृथक् है। समस्त बूँदें जब एक हो जाती हैं और एक बूँद का दूसरी बूँद से भेद समाप्त हो जाता है, तो उसे हम सागर कहते हैं। अब उसका अभिधान सर्वथा पृथक् हो जाता है।

देश की दूरी और काल की सीमा का अतिक्रमण होने पर गुणों (लक्षणों) का लोप-सा होने लगता है और लक्षणों के इस लोप से विभिन्नता (विभेद) का भी लोप होता है, असमानता नष्ट होती है।

सम्पूर्ण सत्ता में पाँच गुण बताये गये हैंह्नह्ननाम, रूप, अस्ति, भाति और प्रिय। नाम और रूप वस्तु-विशेष का संकेत देते हैं। अस्ति, भाति और प्रिय क्रमश: अस्तित्व, प्रकाश और प्रिय (सुखद) को उजागर करते हैं। अस्तित्व, प्रकाश और सन्तुष्टि, नाम और रूप में व्याप्त से प्रतीत होते हैं, नाम और रूप का चाहे कोई भी देश हो अथवा कोई भी काल हो! हम सब नाम और रूप से संयुक्त हैं। हममें से प्रत्येक का नाम भी है और रूप भी है। प्रत्येक के पास नाम और रूप दोनों हैं। नाम-रूप की विषमता के कारण यह संसार नाम-रूप-प्रपंच कहलाता है जो नाम और रूप का माया-जाल (network) है। किन्तु इस तथ्य को सत्य मानते हुए भी, कि हम केवल नाम और रूप का ही दर्शन कर सकते हैं, उसके परे कुछ नहीं देख सकते, तथापि नाम और रूप से अतीत किसी शक्ति से हम प्रेरित होते हैं जो हमारे सामान्य जीवन के व्यस्त क्षणों में एक सुखद अनुभूति बन कर आती है जिसमें हम न केवल नाम और रूप की ही कामना करते हैं, प्रत्युत इस नाम और रूप से भी उत्कृष्टतर 'कुछ' पाने की आकांक्षा रखते हैं। आप कर्म क्यों करते हैं, चिन्तन क्यों करते हैं, किसी भी कार्य में स्वयं को संलग्न क्यों करते हैं? इन सब प्रयासों के पीछे कुछ तो उद्देश्य होगा और वे प्रयास, मात्र नाम और रूप से सम्पर्क स्थापित करने के लिए तो हैं नहीं, प्रत्युत इसका उद्देश्य सर्वथा पृथक् है और वह है लक्ष्य-विशेष की पूर्ति हेतु नाम और रूप का सदुपयोग। हमारे समस्त क्रिया-कलाप केवल एक लक्ष्य पर केन्द्रित हैं, वह है बाह्य सम्बन्धों की स्थापना और विषय-सम्पर्क। इसके अतिरिक्त विषयों से उच्चतर हमारा कोई और प्रयोजन नहीं होता। विषयों अथवा व्यक्तियों का हम ऐसा उपयोग और रक्षण नहीं करते जो हमारे स्वयं के लिए लाभकारी हो। यह उपयोग अन्तिम लक्ष्य के लिए है, नाम और रूप के लिए नहीं। आप इस जगत् में विषयों और व्यक्तियों का अनुसरण नहीं करते, प्रत्युत उन विषयों और व्यक्तियों के माध्यम से आप कुछ विशेष कार्य (effect) और परिणाम (consequences) प्राप्त करना चाहते हैं। यदि ये परिणाम आपको न मिलें, तो आप उन विषयों और व्यक्तियों का निकारण कर देते हैं। ऐसा नहीं है कि आपको विषयों अथवा व्यक्तियों की इच्छा है। आप उनके सम्पर्क से कुछ विशेष परिणाम पाने के इच्छुक हैं। यदि वे परिणाम न मिलें, तो आपको उनकी कोई इच्छा नहीं। आकांक्षित फल न मिलने पर मित्र शत्रु हो जाते हैं अथवा उनसे भेद-भाव हो जाता है। और तो और इच्छाएँ फलीभूत न हों, तो इच्छाओं से ही अप्रीति अथवा विरक्ति हो जाती है। अत: यह नाम और रूप अथवा कोई विषय-वस्तु नहीं जिनकी हम कामना करते हैं, कामना तो हम आकांक्षित परिणाम की करते हैं। क्या है वह परिणाम?

समस्त आकांक्षाओं अथवा अभिलाषाओं की आत्यन्तिक इच्छा होती है तनाव से मुक्ति पाना। किसी भी प्रकार के तनाव से मुक्ति सुख के समान है। तनावयुक्त होने पर आप दु:खी होते हैं और जब तनाव

दूर हो जाता है, आप सुख का अनुभव करते हैं। जीवन में अनेक प्रकार के तनाव हैं और प्रत्येक तनाव दु:ख का केन्द्र है। कभी कुटुम्ब का तनाव है तो कभी जाति का, कभी राष्ट्र का तनाव है तो कभी अन्तर्राष्ट्रीय तनाव है जिसे शीत युद्ध (cold war) की संज्ञा दी जाती है। ये सभी तनाव मनुष्य को चिन्ता और सन्ताप की अवस्था में निक्षिप्त कर देते हैं। तनाव से मुक्ति सन्तोषप्रद है और मनुष्य उसी सन्तोष के लिए कार्यरत रहता है। आप तनावमुक्त होना चाहते हैं। किन्तु ये सब बाह्य तनाव हैं। आन्तरिक तनाव भी हैं, जिनके परिणाम और भी दु:खद हैं अपेक्षाकृत बाह्य तनावों के, जैसेह्नह्नविभिन्न परिस्थितियों के कारण उद्भूत मनोवैज्ञानिक तनाव अर्थात् मानसिक तनाव।

उपनिषद् की भाषा में ये परिस्थितियाँ हमारे व्यक्तित्व के आध्यात्मिक संस्थान में एक जाल-सा बनाती हैं, जिसे हृदय-ग्रन्थि कहते हैं। तन्त्र-शास्त्र और हठयोग-शास्त्र ने इसे विविध नामों से अभिहित किया है। वे हैंह्नह्नब्रह्म-ग्रन्थि, विष्णु-ग्रन्थि और रुद्र-ग्रन्थि, जिन्हें आपने कुण्डलिनी शक्ति के जागरण द्वारा विद्ध करना है। आपने इस विषय में पहले सुना होगा और कुछ सीखा भी होगा। यह अविद्या, काम और कर्म की ग्रन्थि है, यह संस्कारों और वासनाओं का तनाव है, यह अवचेतन अथवा अचेतन मन का तनाव है, यह अपूर्ण इच्छाओं और प्रत्याहत (वृथाभूत) भावों का तनाव है। यह है 'व्यक्तित्व' अपने मूल स्वरूप में। हम इन तनावों के जाल मात्र हैं। यही जीवत्व है।

जीव किससे बना है? यह तनावों के समूह से बना है। यही कारण है कि कोई जीव सुखी नहीं रह सकता। तनावमुक्त होने का प्रथम अवसर प्राप्त करने हेतु हम सदा चिन्ता और उत्सुकता की अवस्था में रहते हैं। इच्छा-पूर्ति के द्वारा जीव तनावमुक्त होने का साधन ढूँढ़ने का प्रयास करता है; क्योंकि अन्ततोगत्वा इच्छाओं की पूर्ति न करके ही तनाव को दूर रखा जा सकता है। प्रत्यक्षत: तो ऐसा आभास होता है कि इच्छा-पूर्ति से तनाव दूर हो सकता है और नाम-रूप के सम्पर्क में आ कर हम 'अस्ति-भाति-प्रिय' में प्रवेश पा सकते हैं; किन्तु जिस विधि का हम अनुसरण करते हैं, वह त्रुटिपूर्ण है। सत्य है कि इच्छाओं की पूर्ति तो होनी चाहिए; क्योंकि जब तक उनकी पूर्ति नहीं होती, तनाव दूर नहीं हो सकता। किन्तु हम इच्छाओं की पूर्ति कैसे करें?

हम अत्यन्त त्रुटिपूर्ण विधा का अनुवर्तन करते हैं। इसीलिए हम कभी भी, किसी भी जन्म में अपनी इच्छाओं की आत्यन्तिक पूर्ति नहीं कर सकते। विषय-सम्पर्क से इच्छा-पूर्ति नहीं होती; क्योंकि सम्पर्क पुन: एक और इच्छा को जन्म देता हैह्नह्नसम्पर्क की पुनरावृत्ति के लिए और इसी प्रकार एक और इच्छा, एक और सम्पर्कह्नह्नऔर यह चक्र अनन्त काल तक चलता रहता हैह्नह्नकिसी वस्तु को प्राप्त करने की कामना और वस्तु का पुन: नव-कामना को जन्म देना, प्रेरित करना। यही चक्र, संसार-चक्र है।

वस्तुओं के साथ सम्पर्क से इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती, प्रत्युत इच्छाएँ और अधिक उद्दीप्त होती हैं मानो विषय-सम्पर्क से उन्हें और ईंधन मिलता है।

विषयों की रचना के विषय में अज्ञान के कारण इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं। जब तक यह अज्ञान का आवरण अनावृत नहीं होता, तब तक तनाव से मुक्ति नहीं हो सकती। और यह अज्ञान, यह अविद्या क्या है? 'अनेकत्व ही सत्य है'ह्लह्लविचारधारा का यह स्वरूप अविद्या है। और भीह्लह्ल'अनेकत्व सहित समस्त अनित्य प्रमेय पदार्थों का समुदाय मिल कर हमें वांछित, अभिलषित सन्तुष्टि दे सकता है'ह्लह्लयह विचार अविद्या है। प्रमेय (साद्यन्त) का पूर्ण समुदाय मिल कर अप्रमेय (अनन्त) नहीं हो सकता और इसी कारण से अनित्य पदार्थों के सम्पर्क से शाश्वत शान्ति और सन्तुष्टि नहीं प्राप्त हो सकती। अत: नाम-रूप-प्रपंच, अस्ति-भाति-प्रिय का साक्षात्कार नहीं करा सकता; क्योंकि यह प्रतिदिन हमारे क्रिया-कलापों में हमें प्रेरित करता है।

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

बालकों के लिए दिव्य जीवन :

नियमितता और समयनिष्ठता जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता की कुंजी

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

(कक्षा में राम और कृष्ण दोनों आपस में बातचीत कर रहे हैं।)

राम : नमस्ते कृष्ण। परीक्षा के दिन बहुत निकट आ चुके हैं। मैंने तो अपनी तैयारी पूरी कर ली है। तुम्हारी तैयारी कहाँ तक हुई है?

कृष्ण : अभी तक मैंने कोई तैयारी नहीं की है। मैं तो खेल-कूद में ही मस्त रहा।

राम : बिना तैयारी किये परीक्षा में पास कैसे होओगे? बताओ तो।

कृष्ण : मैं इस वर्ष परीक्षा में न बैठने की सोच रहा हूँ।

राम : मित्र, ऐसी बात सुन कर मुझे खेद हो रहा है।

(शिक्षक आते हैं।)

शिक्षक : क्या बात है कृष्ण, आज तुम बहुत उदास दिखायी पड़ रहे हो।

राम : गुरु जी, इस बार परीक्षा में न बैठने का इसका विचार है। कहता है, पढ़ाई में बहुत अनियमित रहा है। खेल-कूद में मस्त रहा, इसलिए अब तक कोई तैयारी नहीं कर पाया है।

शिक्षक : यह बात है? अभी भी समय है। परीक्षा के लिए दो महीने बाकी हैं। आज ही से प्रयत्न शुरू कर दो, तो सारी कमी पूरी कर सकते हो। काम चाहे थोड़ा करो, पर नियमित रूप से करो, तो परीक्षा में पास हो सकते हो। कर्तव्य कठोर होता है, पर उसका फल मधुर होता है। मन-बहलाव और खेल के लिए अपने कर्तव्य को नहीं भूलना चाहिए।

चिन्ता न करो। प्रफुल्ल रहो। हिम्मत रखो। काम में लग जाओ। परीक्षा में न बैठने का विचार छोड़ दो और कठिन परिश्रम करने के लिए अपनी कमर कस लो। जो मनुष्य नियमित और समयनिष्ठ रहता है, वह जीवन के सभी क्षेत्रों में निश्चय ही सफलता प्राप्त करता है। क्या तुमने डायमोन और पाइथियस की कहानी सुनी है?

लड़के : जी नहीं।

शिक्षक : ओह! वह बड़ा अद्भुत प्रसंग है; नियमितता से क्या लाभ है, इस बात का बड़ा स्पष्ट चित्र उससे मिलता है।

सिरेक्रूज़ (इटली) में दो गहरे मित्र रहते थेह्नह्नडायमोन और पाइथियस। पाइथियस के किसी अपराध पर वहाँ के राजा ने उसे फाँसी की सजा दे दी। उसने राजा से कुछ समय माँगा, ताकि वह घर जा कर

अपनी पत्नी और बच्चों से मिल आये। उसने वचन दिया कि फाँसी के दिन वह अवश्य ही हाजिर हो जायेगा। उसके मित्र ने जमानत के रूप में अपने को प्रस्तुत किया। सजा का दिन आ गया, लेकिन पाइथियस दिखायी नहीं दिया। तब डायमोन फाँसी पर चढ़ने को तैयार हो गया। उसे फाँसी के तख्ते पर ले जाया गया। बहुत से लोग इकट्ठे हो गये। सबकी आँखों में आँसू थे; क्योंकि डायमोन बिलकुल निरपराध और एक सच्चा मित्र था। चारों ओर उदासी छा गयी थी।

इतने में घोड़ों की टाप सुनायी दी और उसके साथ ही किसी की आवाज भी सुनायी दी कि 'ठहरो, फाँसी को रोको।' डायमोन को फाँसी के तख्ते से उतारने का आदेश दिया गया। लोग बहुत खुश हुए। लेकिन डायमोन का कोई परिवार नहीं था, इसलिए अपने मित्र के स्थान पर वह स्वयं ही फाँसी पर चढ़ने पर जोर दे रहा था। पाइथियस इस बात के लिए राजी नहीं हुआ। राजा को उन दोनों की मित्रता देख कर बड़ी खुशी हुई और उसने मृत्युदण्ड वापस ले लिया। तब से वह उन दोनों का मित्र बन गया।

तो बच्चो, पाइथियस यदि पल-भर भी देर से आता तो डायमोन मर गया होता। जीवन में सफलता देने वाला एकमात्र गुण हैह्लह्लसमयनिष्ठता।

कृष्ण : गुरु जी! आपकी बात ने मुझे पहले से अधिक समझदार बना दिया है। आपने गलत रास्ते पर जाने से मुझे बचा लिया। मैं वचन देता हूँ कि मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा और आगे से कड़ा परिश्रम करूँगा। आपके उपदेश के लिए मैं बहुत आभारी हूँ।

शिक्षक : ईश्वर तुम्हारा भला करे, बच्चे। जो मनुष्य नियमित नहीं है, पक्का निश्चय करके काम नहीं करता, वह अपने प्रयत्नों का फल कभी नहीं पा सकता। नियमितता, अनुशासनबद्धता और समयनिष्ठताह्लह्लसाथ-साथ रहते हैं। भारत के स्कूल-कालेज के विद्यार्थी फैशन में, रहन-सहन में और बाल कटाने में पाश्चात्य देशों के लोगों का अनुकरण करते हैं। यह व्यर्थ है। हमें उनकी नियमितता और समयनिष्ठता जैसे सद्गुणों का अनुकरण करना चाहिए। अँगरेज कितने अनुशासित होते हैं और वे प्रत्येक क्षण का कितना सदुपयोग करते हैं, इस पर ध्यान दो। वे भारतीयों की अपेक्षा अधिक अध्ययनशील, नियमित और समयनिष्ठ हैं। विशेषज्ञों और शोध-छात्रों की संख्या भारत की अपेक्षा विदेशों में अधिक है।

प्रकृति से सीखो। कितनी नियमितता के साथ ऋतुएँ आती हैं; ठीक समय पर सूर्य उदय और अस्त होता है, वर्षा होती है, फूल खिलते हैं, फल और तरकारियाँ पैदा होती हैं, पृथ्वी तथा चन्द्रमा घूमते हैं और दिन, रात, सप्ताह, माह, वर्ष आते रहते हैं। प्रकृति हमारी गुरु है।

जीवन के सभी क्षेत्रों में नियमित रहो। नियम से जल्दी सोओ और उठो। 'जल्दी सोना और जल्दी उठना स्वास्थ्य, समृद्धि और बुद्धि बढ़ाता है।' खाने में, पढ़ाई में, व्यायाम में, पूजा-ध्यान में सदा नियमित रहो। इस तरह तुम जीवन में सफल रहोगे और सुखी भी। नियमितता और समयनिष्ठता तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिए।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

बाल-स्तम्भ

सब-कुछ दूसरों का ही

स्वामी रामराज्यम्

दो व्यापारी थे। दोनों चचेरे भाई थे। छोटे भाई राधाकृष्ण का व्यापार मन्दा था, इसलिए उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। बड़ा भाई रामप्रसाद प्रेमपूर्वक उसकी सहायता किया करता था।

एक दिन रामप्रसाद अपने घर की सफाई कर रहा था। उसे एक बक्से में पुराने कागजों का एक पुलिन्दा मिला। उसमें उसके पिता के हाथ का लिखा हुआ एक कागज था। उस कागज को पढ़ कर रामप्रसाद को यह पता चला कि जिस घर में वह रह रहा था, वह उसके पिता की नहीं, राधाकृष्ण के पिता की सम्पत्ति थी। राधाकृष्ण के पिता को अपने ऊपर चलाये गये एक झूठे मुकदमे के कारण यह आशंका हो गयी थी कि उनके मकान की कुर्की हो जायेगी। कुर्की की कार्रवाई से बचने के लिए उन्होंने अपना मकान रामप्रसाद के पिता को दो लाख रुपये में बेच दिया था। यह बिक्री फर्जी थी, केवल कागज पर थी और धन का कोई लेन-देन नहीं हुआ था। राधाकृष्ण और रामप्रसाद की माताओं को भी यह बात नहीं बतायी गयी थी। इतना ही नहीं, राधाकृष्ण के पिता ने अपने मकान में रहना भी छोड़ दिया था और उसमें रामप्रसाद का पिता सपरिवार रहने लगे थे। बाद में राधाकृष्ण और रामप्रसाद के पिताओं की मृत्यु एक साथ ही, एक ही मोटर-दुर्घटना में हो गयी थी। रामप्रसाद तब बहुत छोटा था और राधाकृष्ण का जन्म भी नहीं हुआ था। इस प्रकार इस नकली बिक्री के बारे में न रामप्रसाद को पता चला और न राधाकृष्ण को।

वह कागज पढ़ने के बाद रामप्रसाद ने यह बात अपनी पत्नी को बतायी। पत्नी ने कहाह्लह्ल''ठीक है, हम राधाकृष्ण को उसका मकान वापस कर देंगे और किसी दूसरे मकान में रह लेंगे। अब तक हमने उसके मकान पर कब्जा जमाये रखा, इसके बदले में हमें कुछ धन भी उसे दे देना चाहिए।''

रामप्रसाद वह कागज और एक लाख रुपये का चेक ले कर राधाकृष्ण के पास पहुँचा। उसे सारी बातें बता कर वह बोलाह्लह्ल''तुम्हारी चीज तुमको वापस कर रहे हैं। देर में वापस करने के लिए हमने अपने ऊपर एक लाख रुपये का जुरमाना किया है, जुरमाने की रकम भी दे रहे हैं।''

रामप्रसाद के पैरों पर पड़ते हुए राधाकृष्ण बोलाह्लह्ल''अब तक हम आपके ही जिलाये जिये हैं, नहीं तो गरीबी में हमारा गुजर-बसर कैसे होता! आप ही हमारे पिता हैं। पुत्र पिता से जुरमाना वसूल करे! यह आपने क्या कह दिया?''

रामप्रसाद ने राधाकृष्ण को प्रेमपूर्वक चिपटा लिया।

बच्चो, सच पूछो तो हमारी अपनी ही सम्पत्ति अपनी नहीं है। उस पर उनका अधिकार है, जिन्हें उसकी आवश्यकता है। फिर दूसरों की सम्पत्ति को अपनी मानने का प्रश्न ही कहाँ उठता है! दूसरों की सम्पत्ति दूसरों की है; अपनी सम्पत्ति भी दूसरों के लिए है। सब-कुछ दूसरों का ही है। □

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' की सेवाएँ

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय विनम्रतापूर्वक लक्ष्मणझूला के निकट स्थित 'शिवानन्द होम' द्वारा ऐसे जरूरतमन्द तथा निर्धन लोगों की सेवा में सतत प्रयत्नशील है, जिन्हें औषधीय उपचार की आवश्यकता है; परन्तु जो साधनहीन, निराश्रित, मानवीय सहायता से वंचित तथा समाज द्वारा उपेक्षित हैं और जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है, 'शिवानन्द होम' इस अस्थायी जगत् में उन लोगों के लिए एक अस्थायी घर है, कभी थोड़े लम्बे समय के लिए और कभी बहुत ही कम समय के लिए।

'शिवानन्द होम' के बच्चे अपनी वार्षिक परीक्षाओं के बाद अगली कक्षाओं में अपनी पढ़ायी चालू रख रहे हैं। उनमें से एक बच्चा ऋषिकेश के ज्योति स्कूल में जाता है। यह स्कूल शारीरिक और मानसिक विकलांग बच्चों के लिए है। यह बालक रामू पाँच वर्ष पूर्व आश्रम मुख्यालय से आया था, तब यह छोटा बालक था, अच्छी तरह बोल भी नहीं पाता था। मानसिक रूप से विकलांग यह बालक बार-बार कीचड़ में लथपथ हो जाता था। जो देख कर भी अनदेखा किया जाता रहा हो, जिसे कोई सुनना-समझना न चाहता हो, ऐसे उपेक्षित का गहरा हृदय में बैठा हुआ दर्द जाने में समय लगता है। धीरे-धीरे परमात्मा की अपार कृपा से वह अपनी किशोरावस्था में एक सुदृढ़ लड़का बन रहा है। रसोईघर में सहायता करते हुए, खाली समय में बर्तन साफ करते हुए, जरा से प्रशंसा-भरे शब्द सुनते ही उसके चेहरे पर आयी चमक देखते ही बनती है। एक वास्तविक परिवर्तन, स्नेह का उपहार, स्पष्टवादी और सच्चा भोला-भाला बच्चा है यह !

सभी वस्तुएँ सुन्दर और आभामयी,
सभी प्राणी छोटे और बड़े।
सभी वस्तुएँ विलक्षण और अद्भुत,
सभी को बनाने वाला वह एक ही प्रभु।

एक दूसरी कहानी है ८५ वर्षीय बूढ़ी माँ की, गम्भीर गठिया रोग से पीड़ित, मूत्र-प्रणाली में अवरोध, चलने तक में लाचार! किन्तु कितना अद्भुत है उसे देखनाह्नह्ननित्य प्रात: स्नान के बाद महिला वार्ड के अन्दर बने छोटे से मन्दिर में शैया पर बैठे हुए या लेटे ही लेटे अपने प्रभु के लिए घण्टी बजाते हुए! घण्टों तक वह यों ही मस्त रहती है, जब तक उसे खाने के लिए न कहा जाये। और प्रभु-प्रसाद पा लेने के बाद वह घण्टों निरन्तर उसी में निमग्न रहती है; उससे वाणी से भले ही कहा न जाये, शरीर से भले ही झुका न जाये, किन्तु हाथों से ही वह नतमस्तक होती रहती है, अपने हृदय के भीतर निवास करने वाली ज्योतियों की उस परम

ज्योति के प्रति! एक सतत अटूट स्मरणह्लह्ल'वह' यहीं हैं, 'वह' वहाँ भी हैं, 'वह' सर्वत्र हैं!

इसी भक्ति-भाव और दिव्य नामस्मरणपूर्वक अप्रैल माह में श्री हनुमान् जयन्ती 'होम' में अत्यन्त श्रद्धा से भजन, कीर्तन, सत्संग और पावन प्रसाद वितरण द्वारा मनायी गयी। ॐ श्री रामभक्ताय नमः, ॐ श्री दीनबान्धवाय नमः, ॐ श्री सीतासमेता श्रीरामपादसेवाधुरन्धराय नमः।

''जो भूखे हैं, उन्हें भोजन दें; जो वस्त्र-हीन हैं, उन्हें वस्त्र दें; जो रोगी हैं, उनकी परिचर्या करें। यह दिव्य जीवन है।'' ह्लह्लस्वामी शिवानन्द

५५ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का समापन समारोह

५५ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का समापन समारोह रविवार, २९ अप्रैल २००७ को योग-वेदान्त अरण्य अकादमी के लैक्चर हाल में हुआ। प्रारम्भिक प्रार्थना के उपरान्त अकादमी के कुलसचिव प्रोफेसर श्री वेदप्रकाश ग्रोवर जी ने स्वामी जी, प्राध्यापक वर्ग, अतिथियों और विद्यार्थियों का स्वागत किया। उप-कुलसचिव प्रोफेसर राजेन्द्रकुमार भारद्वाज जी ने कोर्स की रिपोर्ट पढ़ी। उसके बाद दिव्य जीवन संघ के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने विद्यार्थियों को सर्टीफिकेट तथा ज्ञान-प्रसाद प्रदान किया और प्राध्यापक वर्ग को भी सम्मानित किया। फिर कुछ विद्यार्थियों ने कोर्स से सम्बन्धित अपने विचार और उद्गार प्रकट किये तथा एक विद्यार्थी ने भजन गाया।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें खुशी है कि विद्यार्थियों ने सफलतापूर्वक कोर्स पूरा किया है और आध्यात्मिक पथ पर निर्देशन प्राप्त किये हैं। स्वामी जी महाराज ने महात्मा गान्धी, पापा रामदास तथा गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन-चरित्रों में से उदाहरण देते हुए कर्मयोग और नाम-स्मरण पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमें भीतर छिपे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य रूपी मलों को दूर करना चाहिए तथा निरन्तर भगवन्नाम-स्मरण करना चाहिए। स्वामी जी महाराज ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा कि संसार में रहते हुए उन्हें संसार में लिप्त नहीं होना चाहिए और ईश्वर-प्राप्ति के परम लक्ष्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए। विद्यार्थियों के लिए स्वास्थ्य, दीर्घायु, सुख-सफलता और आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होते रहने के आशीर्वादों की प्राप्ति के लिए गुरुदेव से प्रार्थना करते हुए स्वामी जी महाराज ने प्रवचन समाप्त किया। सरस्वती-पूजा और प्रसाद-वितरण सहित लगभग १०.३० पर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

५६ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का शुभारम्भ

योग-वेदान्त अरण्य अकादमी (दिव्य जीवन संघ मुख्यालय) के ५६ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का शुभारम्भ गुरुवार, ३ मई २००७ को हुआ जिसमें १२ विभिन्न प्रान्तों में से कुल ४३ विद्यार्थी भाग लेने के लिए आये। श्री दत्तात्रेय मन्दिर में पूजा तथा 'जय गणेश' प्रार्थना और गुरुस्तोत्र-पाठ के उपरान्त अकादमी के

कुलसचिव प्रोफेसर वेदप्रकाश ग्रोवर जी ने सभी उपस्थित लोगों का स्वागत किया। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज कार्यक्रम की शोभा को बढ़ा रहे थे। उन्होंने इस कोर्स के शुभारम्भ के प्रतीक स्वरूप दीपक प्रज्वलित किया।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने भाग लेने के लिए आये हुए विद्यार्थियों का पूज्य श्री गुरुदेव के आश्रम में स्वागत किया और कहा कि यह उनके भीतर उदित हुई एक जागरूकता का ही परिणाम है कि आज वह यहाँ हैं। स्वामी जी महाराज ने विद्यार्थियों से कहा कि मनुष्य-जन्म प्राप्त करना अत्यन्त दुर्लभ है, इसलिए जब सौभाग्य से यह प्राप्त हो गया है, तो इस जन्म-प्राप्ति के परम लक्ष्य अर्थात् ईश्वर-साक्षात्कार को प्राप्त करने के लिए इसे लगा देना चाहिए। हमारे महान् सन्त बार-बार इसका स्मरण हमें कराते रहते हैं और इसी को प्राप्त करने के लिए हमें भगवान् ने वह विवेक-शक्ति प्रदान की है जो अन्य किसी भी प्राणी को नहीं दी गयी है। स्वामी जी महाराज ने कहा कि मनुष्य में भी पाशविक वृत्तियाँ छिपी रहती हैं जिनके बारे में प्राय: उसे स्वयं पता नहीं चलता और अपने-आप उसे वह दूर भी नहीं कर सकता। इसीलिए गुरु की सहायता की आवश्यकता होती है। स्वामी जी महाराज ने इस बात पर बल दिया कि विद्यार्थी जो भी साधना कर रहे हैं, उसे गम्भीरता और सच्चाई के साथ करते रहें। इसी के साथ उन्होंने अपना वक्तव्य सम्पूर्ण किया। सरस्वती-पूजा और प्रसाद-वितरण के साथ लगभग १०.३० पर कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

आराधना के अवसर पर विशेष छूट

१ जुलाई २००७ से ३० सितम्बर २००७ तक

पुस्तकों पर छूट

३०० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर २०%

१००० रु. की पुस्तकों के आर्डर पर ३०%

१५०० रु. से अधिक की पुस्तकों के आर्डर पर ३५%

सीडी, वीसीडी और कैसेटों पर छूट

किसी भी मूल्य/क्वांटिटि की खरीद पर २५%

('Chidananda—The fountain of Grace; Guru Purnima Darshan 2006' को छोड़ कर)

पैकिंग तथा डाक खर्चा अलग से है। सभी आर्डरों के साथ ५०% अग्रिम धन-राशि भेजें।

यह विशेष छूट केवल भारत में ही भेजने के लिए उपलब्ध है।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, द शिवानन्द पब्लीकेशन लीग

पोस्ट : शिवानन्दनगरह्वह्व२४९१९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

फोन : (९१) ०१३५-२४३४७८०, २४३००४०; E-mail: bookstore@sivanandaonline.org

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ की राजकोट तथा भावनगर, उभय शाखाओं के स्नेहशील आमन्त्रण के अनुसन्धान में दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने उक्त शाखाओं की मुलाकात ले कर उन शाखाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लिया। अहमदाबाद के अनेक भक्तों तथा मित्रों द्वारा समयोचित सुस्वागत के पश्चात् उन्होंने आदरणीय डा. शिवानन्द अध्वर्यु जी (श्री स्वामी याज्ञवल्क्यानन्द जी महाराज) के द्वारा स्थापित 'शिवानन्द मिशन, वीरनगर' के प्रति प्रस्थान किया। उनके आगमन पर 'शिवानन्द मिशन, वीरनगर' के व्यवस्थापक-न्यासी और ब्रह्मलीन बापूजी के वरिष्ठ सहयोगी श्री प्राणलालभाई जी ने पूज्य बापूजी की पावन-स्मृति सह स्वामीजियों का स्वागत किया तथा उनके सुखद निवास हेतु सम्पूर्ण व्यवस्था की। पूज्य स्वामीजियों ने वीरनगर शाखा के सान्ध्य-सत्संग में निज उपस्थिति दी।

दिनांक १४ मई को उन्होंने राजकोट प्रति प्रस्थान किया। दिव्य जीवन संघ की राजकोट शाखा ने स्व-इमारत के तल भाग में एक सुन्दर सत्संग हॉल तथा प्रथम मंजिल पर कक्षों का निर्माण किया है। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज और श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने नूतन इमारत का उद्घाटन किया । कार्यक्रम के आरम्भ के पूर्व परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने हॉल में स्थापित पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की नूतन प्रतिमा की अनावरण विधि सम्पन्न की।

जिस स्थान से महात्मा गान्धी जी ने स्वातन्त्र्य-आन्दोलन का श्रीगणेश किया, उस 'गान्धी-स्मृति-राष्ट्रीयशाला' में दिव्य जीवन संघ की राजकोट शाखा द्वारा सायंकाल में एक जाहीर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने 'जीवन का ध्येय' विषयक और श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने 'दैनिक जीवन में भक्तियोग' विषयक व्याख्यान दिये।

दिनांक १५ मई को वे सड़क द्वारा भावनगर प्रति गतिमान हुए। श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज ने सायंकाल में 'शिशु विहार हॉल' में सार्वजनिक प्रवचन आयोजित किये। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने 'स्वामी शिवानन्दह्लह्लसेवा और साधना की मूर्ति', श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने 'साधना के क्रमिक सोपान' तथा श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने 'योग: कर्मसु कौशलम्' विषयक व्याख्यान दिये। सुशिष्ट श्रोतागण की उपस्थिति में वह एक सुआयोजित कार्यक्रम था।

इस मुलाकात के दौरान परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ की विभिन्न शाखाओं के पदाधिकारियों के साथ विचार-विमर्श किया और उनको गुरुदेव के आदर्शों के अनुमोदन तथा समर्थन के हेतु एवं सत्य, सदाचार तथा प्रेम के सन्देश के प्रसार हेतु प्रेरित किया, जिससे शान्ति और समन्वय स्थापित हों।

पूज्य स्वामीजियों का दिनांक १७ मई को आश्रम में पुनरागमन हुआ।

* * *

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

(१) विशेष अवसर

(क) स्थापना–दिन समारोह

अम्बाला (हरियाणा): शाखा ने 'स्वामी शिवानन्द सभ्रवाल सत्संग भवन' के उद्घाटन के ८ वें वार्षिक-दिन के अवसर पर, दिनांक २५ मार्च २००७ को एक विशेष सत्संग का आयोजन किया।

बड़कुआँल (उड़ीसा): परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने दिनांक ४ जनवरी को 'स्वामी शिवानन्द सत्संग आश्रम' को उद्घाटित किया। उनके आगमन पर उनका तथा आदरणीय श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी का सम्पूर्ण सन्मान सहित स्वागत किया गया तथा उन्हें नगर-संकीर्तन की दीर्घ शोभायात्रा के रूप में विधिपूर्वक ले गये। उभय स्वामीजिओं ने पादुका-पूजन में भाग लिया तथा प्रवचन दिये। द्वितीय दिन, १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड संकीर्तन तथा एक विशेष सत्संग आयोजित हुए। तीन ही कार्यक्रमों में बहुसंख्य भक्त प्रतिभागी हुए।

भंजनगर (उड़ीसा): शाखा ने वर्ष १९५० में, दिनांक जनवरी २५ के, स्व-स्थापना-दिन को विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों से मनाया, जिसमें ३०० भक्त सपरिवार उपस्थित थे।

खाटिगुडा (उड़ीसा): निज स्थापना-दिन को मनाने के लिए शाखा ने दिनांक २७-२८ जनवरी को विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया। आदरणीय श्री स्वामी नारायणपादानन्द जी ने विशेष सत्संगों, ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा में, महामन्त्र संकीर्तन में, प्रभातफेरी में, पादुका-पूजन में, पारितोषिक-वितरण में, आध्यात्मिक प्रवचनों में और नारायण-सेवा में निज उपस्थिति दी।

लँगथाबाल (मणिपुर): शाखा ने निज स्थापना-दिन, मार्च माह के दिनांक २० को एक विशेष सत्संग परिचालित किया।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा दिनांक ७ फरवरी को एक स्थानिक महात्मा और २०० भक्तों की उपस्थिति में 'स्वामी शिवानन्द भजन मन्दिर' में भगवान् विश्वनाथ का प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुआ। नवरात्रि की अवधि में ७ मार्च को आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी द्वारा माँ दुर्गादेवी की प्राण-प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इस पावन अवसर पर एक हवन आयोजित किया गया।

नीमापडा (उड़ीसा): परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी शिवस्वरूपानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी त्यागस्वरूपानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी गुरुप्रेमानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी सदाशिवानन्द जी ने स्व-प्रेरक उपस्थिति से, दिनांक जनवरी ३० को शाखा के स्थापना-दिन के कार्यक्रमों की शोभा में अभिवृद्धि की। पूर्ण दिन के आयोजित कार्यक्रमों में श्रीमद्भगवद्गीता पारायण, नगर-संकीर्तन, नारायण-सेवा और टाउन हाल में जाहीर कार्यक्रम आदि समाविष्ट थे।

राउरकेला, फर्टिलाइज़र टाउनशिप (उड़ीसा): शाखा ने दिनांक २६ फरवरी को स्व-स्थापना-दिन के अवसर पर श्रीमद्भगवद्गीता का दस दिवसीय ज्ञान-सत्र आयोजित किया। समापन के दिन, दिनांक ७ मार्च को निर्धनों को अन्नदान हुआ।

सुनाबेडा, महिला शाखा (उड़ीसा): शाखा ने दिनांक १५ फरवरी को स्व-स्थापना के दस वर्ष के त्वरित

आध्यात्मिक कार्यक्रमों की सम्पन्नता के साथ-साथ दिनांक १४, १५ और १६ फरवरी को, विविध आध्यात्मिक प्रवृत्तियों से युक्त एक सुआयोजित तीन दिवसीय उत्सव किया। तीनों दिन एक-एक पत्रिका का विमोचन करके नि:शुल्क वितरित की गयी। स्थानिक महानुभावों सहित बहुसंख्य व्यक्तियों ने कार्यक्रमों में उपस्थिति दी। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज के प्रवचन, दि ऍरोनॉटीक्स कॉलेज, नालको इंजीनियरिंग कॉलेज और स्थानिक विद्यालयों में आयोजित किये गये। आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी ने कार्यक्रमों में निज पवित्र उपस्थिति दी।

(ख) श्री महाशिवरात्रि

हमें अनेक शाखाओं के श्री महाशिवरात्रिपर्व के विविध कार्यक्रमों के अहवाल प्राप्त हुए हैं। गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़) शाखा ने १५ दिन पर्यन्त, लगातार अखण्ड कीर्तन, प्रभातफेरी, पंचकुण्डीय यज्ञ, रात्रिभर ४ प्रहरीय पूजा, भण्डारा इत्यादि आयोजित किये। भुवनेश्वर (उड़ीसा) ने २४ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप तथा रात्रि-पूजा आदि की सम्पन्नता की। १२ घण्टों पर्यन्त दिनावधि में अखण्ड जप और ४ प्रहरीय पूजाओं की पूर्णता बढ़ियाउस्ता (३०० प्रतिभागी), कुआकोंडा (छत्तीसगढ़), बेलागुंठा, राउरकेला, सालेपुर, सुनाबेडा और सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा) में की गयी। रात्रि-जागरण और पूजा अहिवारा (छत्तीसगढ़), घाटपदमुर, जगदलपुर (छत्तीसगढ़) और नीमापड़ा (उड़ीसा) में सम्पन्न हुए। रुद्राभिषेक, विशेष पूजा, विशेष सत्संग और अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमों की पूर्णता के अहवाल अहमदाबाद-उस्मानपुरा (गुजरात), बेंगलूरु (कर्नाटक), बरबिल् (उड़ीसा), बीकानेर (राजस्थान), बुर्ला (उड़ीसा), जयपुर (राजस्थान), खाटिगुडा (उड़ीसा), नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़), नई दिल्ली-लाजपतनगर, नौगाँव (उड़ीसा), सुनाबेडा (उड़ीसा) और विक्रमपुर (उड़ीसा) की शाखाओं से प्राप्त हुए हैं।

(ग) श्री रामनवमी

प्रमुख कार्यक्रमों में से कुछ निम्नानुसार थे :

अम्बाला (हरियाणा): श्री सुन्दरकाण्ड पारायण।

बेंगलूरु (कर्नाटक) : श्री रामायण विषयक नव-दिवसीय प्रवचन।

बारिपदा (उड़ीसा): विशेष पूजा आदि।

भुवनेश्वर (उड़ीसा) : ६ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन।

बीकानेर (राजस्थान): श्री रामायण तथा श्री दुर्गासप्तशती के पारायण, विशेष पूजा आदि।

धुन्कापडा (उड़ीसा): नव-दिवसीय श्री रामायण पारायण, ३ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन, विशेष पूजा, हवन आदि।

घाटपदमुर, जगदलपुर (उड़ीसा): नव-दिवसीय श्री रामायण पारायण, ३ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन, विशेष पूजा, हवन आदि।

गुमरगुण्डा (उड़ीसा): श्री रामायण और श्री दुर्गासप्तशती के पारायण, १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन, विशेष पूजा, हवन आदि।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़): विशेष सत्संग, पूजा।

सालेपुर (उड़ीसा): 'मनाचे श्लोक' के स्वाध्याय सहित २४ घण्टों पर्यन्त आध्यात्मिक कार्यक्रम।

सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा) : श्री रामायण का नव-दिवसीय पारायण।

(घ) जयन्ती, पुण्यतिथि

अनेक शाखाओं द्वारा प्रति मास मनाये जाते शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजन,

१२ घण्टों का अखण्ड जप, विशेष सत्संग और अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमों के विषय में अहवाल प्राप्त हुए हैं। नई दिल्ली-लाजपतनगर और जयपुर शाखाओं ने दिनांक ४ फरवरी को परम पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, महायज्ञ इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किये। परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि को भुवनेश्वर शाखा ने परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की उपस्थिति में विविध कार्यक्रम सम्पन्न किये।

(ङ) अन्य सुअवसर तथा गतिविधियाँ

बीकानेर और लँगथाबाल शाखाओं ने श्री महावीर जयन्ती को खास कार्यक्रम आयोजित किये। नूतन वर्ष के विशेष कार्यक्रम भुवनेश्वर, चण्डीगढ़, छत्रपुर (उड़ीसा) शाखाओं द्वारा तथा समीपवर्ती ग्राम में नीमापड़ा शाखा ने सम्पन्न किये। कई शाखाओं ने संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावास्या और उभय एकादशियों के और श्री गौरांग महाप्रभु की जयन्तीह्लह्लहोली को विशेष सत्संग, जप-यज्ञ, श्रीमद्भगवद्गीता और श्री विष्णु सहस्रनाम के पारायण आदि पूर्ण किये। अनेक शाखाएँ नियमित रूप से १२ घण्टों का अखण्ड जप सम्पन्न करती हैं। किन्तु विशाखपटनम् (आन्ध्र प्रदेश) शाखा ने दिनांक १३-१४ फरवरी को २४ घण्टों पर्यन्त महामन्त्र का अखण्ड जप आयोजित किया।

(२) ज्ञानसत्र

भीमकाण्ड (उड़ीसा) शाखा ने दिनांक ३ से १० फरवरी पर्यन्त एवं दिनांक २३ से २९ जनवरी पर्यन्त नीमापडा शाखा ने श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण और कथा सुआयोजित किये। भुवनेश्वर शाखा द्वारा दिनांक २ से ५ जनवरी पर्यन्त 'श्रीमद् भागवतम्' पर प्रवचन तथा १ से ३ जनवरी पर्यन्त 'गीता ज्ञान यज्ञ' सम्पन्न हुए। जयपुर शाखा ने दिनांक ७ से २२ जनवरी की समयावधि में श्रीमद् भगवद्गीता पर प्रवचन तथा दिनांक ११ से १७ फरवरी की दिनावधि में श्री रामायण पर प्रवचन आयोजित किये। दिनांक १६-१७ फरवरी को २९ घण्टों पर्यन्त श्री रामायण का अखण्ड पारायण परिचालित किया। नई दिल्ली-लाजपतनगर शाखा ने दिनांक २५ मार्च से दैनिक प्रवचन की गतिविधि पूर्ण की। अनेक शाखाओं ने वासंतिक नवरात्रि में श्री रामायण का नवदिवसीय पारायण सफलता से सम्पन्न किया। बड़कुआँल शाखा ने दिनांक २४, २५ और २६ मार्च को श्री रामायण का पारायण परिचालित किया।

(३) साधना शिविर

बहुत शाखाएँ नियमित रूप से 'मासिक साधना-दिन' मनाती हैं। आध्यात्मिक कार्यक्रमों के पश्चात् अकिंचनों को अन्नदान होता है तथा भक्तगण प्रसादस्वरूप में मध्याह्न-भोजन लेते हैं। राउरकेला की उभय शाखाओं द्वारा दिनांक १८ फरवरी को आयोजित आध्यात्मिक शिविरों में २५० प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक लाभ लिया।

(४) सन्तों का आगमन तथा भेंट

वरिष्ठ सन्तों की शाखाओं की भेंट के महान् अवसर पर उत्साहपूर्वक स्वागत तथा उत्सव करने के विषय में जैसे पूर्व वर्णित किया था, उस प्रकार दिनांक १९ जनवरी को परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने भद्राचलम् (आन्ध्र प्रदेश) शाखा के श्री शिवानन्द आश्रम की मुलाकात ली। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने दिनांक ६ फरवरी को भीमकाण्ड शाखा, दिनांक ६-७ जनवरी को भुवनेश्वर शाखा और आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी सहित दिनांक १८-१९ फरवरी को जयपुर (उड़ीसा) शाखा की भेंट की। कार्यक्रमों में स्वागत-शोभायात्रा, प्रातःकालीन ध्यान, विशेष सत्संग (३०० भक्तों की उपस्थिति), जाहीर

प्रवचन इत्यादि समाविष्ट थे। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज व आदरणीय श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी ने ५०० भक्तों की उपस्थिति में विक्रमपुर शाखा के साधना-शिविर का परिचालन किया। विलासपुर (छत्तीसगढ़) शाखा ने आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी को निमन्त्रित करके दिनांक २३-२४ मार्च को जाहीर प्रवचन तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित किये।

(५) योगासन तालीम और कैम्प

दैनिक योगासन-प्राणायाम-ध्यान वर्ग गान्धीनगर, अहमदाबाद-उस्मानपुरा, भुवनेश्वर, बीकानेर, घाटपदमुर-जगदलपुर, गुमरगुण्डा, खुर्जा (उत्तर प्रदेश), जयपुर, नई दिल्ली-लाजपतनगर और सालेपुर शाखाओं द्वारा परिचालित किये जाते हैं। आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने दिनांक १० से १६ फरवरी को (१४० तालीमार्थी) गान्धीनगर में और दिनांक १४-२२ और मार्च २२-२८ में लाडवा-कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में योगासन कैम्प सम्पन्न किये। अन्य योग कैम्प, दिनांक १-१० जनवरी को भुवनेश्वर में, दिनांक २४ फरवरी को कॉलेज फैकल्टी और शिक्षार्थियों के लिए सालेपुर में तथा विजयवाडा (आन्ध्र प्रदेश) शाखा में स्कूल-छात्रों (४०० तालीमार्थी) के लिए परिचालित हुए।

(६) समाज-सेवा

(क) निर्धनों को चिकित्सिकीय सहाय

अहमदाबाद-उस्मानपुरा शाखा ने मोतीबिन्दू की शल्यक्रिया कराने वाले ४० मरीजों को आर्थिक तथा अन्य सहाय की। बारिपदा शाखा कुष्ठरोगियों की एक संस्था के अन्तेवासियों हेतु दवाइयों का नि:शुल्क वितरण करती है। चण्डीगढ़ शाखा ने नियमित रूप से, प्रति माह के द्वितीय और चतुर्थ रविवारों को चिकित्सिकीय परीक्षण के नि:शुल्क कैम्प के अतिरिक्त दिनांक २६ जनवरी को पंचकूला (हरियाणा) में निराधार बालकों के गृह में भी एक मेडिकल कैम्प सम्पन्न किया। आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने भी उस कैम्प की भेंट की। नई दिल्ली-लाजपतनगर शाखा 'शिवानन्द सत्संग भवन' में प्रति रविवार को मेडिकल परीक्षण तथा उपचार करती है। शिवानन्द चैरिटेबल चिकित्सालय, शिवानन्द आश्रमह्नह्नराउरकेला, रक्त-परीक्षण, अन्य परीक्षण, औषधियाँ आदि की सुविधाएँ देती है। साउथ बलाण्डा (उड़ीसा) शाखा अत्यन्त निर्धन वसाहत में माह में द्विवार, नियमित रूप से, मेडिकल कैम्प आयोजित करती है। लगभग ४०० मरीजह्नह्न२०० बालकों, १६० स्त्रियाँ और ४० पुरुष प्रति माह लाभान्वित होते हैं। सुनाबेडा शाखा की रविवारीय चिकित्सिकीय सेवा प्रति माह लगभग २०० मरीजों के उपचार करती है।

अनेक शाखाएँ चैरिटेबल होमियोपैथिक चिकित्सालय सम्पन्न करती हैं। अम्बाला शाखा के प्रमुख डा. ओ. पी. शर्मा दो औषधालयों में दैनिक रूप से सेवाएँ देते हैं। गत दो माहों की अवधि में बरबिल् शाखा द्वारा ८४७, जयपुर शाखा द्वारा १६९६ और सालेपुर शाखा द्वारा ५८३ मरीजों के उपचार किये गये।

(ख) नारायण-सेवा

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का निर्धन, निराधार और पीड़ितों की सेवा करने के उत्साह का, मुख्यालय, बहुसंख्य शाखाएँ और भक्तों द्वारा अनुकरण, अनुसरण द्वारा सुन्दर प्रतिभाव दिया जाता है। सब विशेष अवसरोंह्नह्नवार्षिक-दिन, मासिक शिवानन्द-दिन, चिदानन्द-दिन, साधना-दिन, संक्रान्ति, ग्रहणह्नह्नपर शाखाएँ निर्धनों को अन्नदान करती हैं। कई शाखाएँ अकिंचनों के कल्याण को निज नियमित गतिविधियों के रूप में अपनाती हैं। बारिपदा शाखा कुष्ठरोगियों की संस्था में अन्नदान और चण्डीगढ़ शाखा निर्धनों के लिए प्रति माह द्विवार भण्डारे का आयोजन करती है। भद्राचलम् (आन्ध्र

प्रदेश) शाखा ने उनकी नारायण-सेवा की शताब्दी पूर्ति में १५२ निर्धन व्यक्तियों को अन्नदान और ९२ अकिंचन व्यक्तियों को वस्त्रदान सम्पन्न किये। जयपुर शाखा दैनिक रूप से २५०-३०० दीन-हीन व्यक्तियों को अन्नदान तथा एक कुष्ठरोगियों की वसाहत में लगभग ९० किलोग्राम कोरे राशन की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। वही शाखा निर्धन छात्रों तथा विधवा स्त्रियों को आर्थिक सहाय नियमित रूप से करती है। खुर्जा (उत्तर प्रदेश) शाखा प्रति माह दिनांक १ को निर्धनों की पूर्ण सहाय करती है। नई दिल्ली-लाजपतनगर शाखा हर माह के दिनांक ५ को १५० छात्रों को पोषक चीज-वस्तुएँ और दूध वितरित करती है। राउरकेला शाखा अन्ध छात्रों को चिकित्सिकीय परीक्षण, औषधियों का वितरण और सत्संग सम्पन्न करती है।

(७) नियमित आध्यात्मिक गतिविधियाँ

उपरोक्त शाखाओं के अतिरिक्त नाभा (पंजाब), नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश), नई दिल्ली (वसन्त विहार), श्रीकाकुलम् (आन्ध्र प्रदेश) और वाराणसी (उत्तर प्रदेश) शाखाओं ने भी नियमित आध्यात्मिक गतिविधियों के अहवाल दिये हैं।

विदेशी शाखाएँ

हाँगकाँग (चीन): शाखा के प्रति माह के द्वितीय शनिवार को आयोजित होने वाले मासिक सत्संग में महामृत्युंजय मन्त्र का कीर्तन १ घण्टे पर्यन्त और गुरुदेव की पुस्तकों का स्वाध्याय समाविष्ट हैं। शेष शनिवारों को लगभग १०० भक्त १ घण्टे के महामन्त्र के संकीर्तन में संलग्न होते हैं। शाखा द्वारा मार्च २००७ के माह में ३८७ नये प्रतिभागियों के साथ योगासन-प्राणायाम-ध्यान के २५ वर्ग परिचालित हुए। दिनांक १६-१२-२००६ से दिनांक ३१-३-२००७ की अवधि में 'समन्वय योग का सैद्धान्तिक अभ्यासक्रम और उसकी प्रायोगिक प्रत्यक्ष रीति' विषय पर योगशिक्षक-तालीम वर्ग सम्पन्न हुए, जिसमें ४६ प्रतिभागियों ने और 'योग का अभ्यास और प्रत्यक्ष उपयोग' विषय के मार्च माह के वर्ग में १२ योगशिक्षकों ने भाग लिया।

सूचना

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव अर्थात् भगवान् श्री कृष्ण का प्राकट्य-दिवस शिवानन्दनगर में **४ सितम्बर २००७** को मनाया जायेगा। इस अवसर पर श्री विश्वनाथ मन्दिर में लक्षार्चना-महाभिषेक तथा हवन, द्वादशाक्षर-मन्त्र **(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)** का अखण्ड कीर्तन, सन्दर्भ ग्रन्थों का पाठ, श्रीमद्भागवत-पारायण तथा अन्त में अर्धरात्रि को आरती आदि के साथ विशाल पूजा होगी। इस पूजा में सम्मिलित होने के लिए सभी भक्तों का स्वागत है। उन्हें अपने आने की पूर्व-सूचना '**महासचिव, दिव्य जीवन संघ, पो. शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखंड**' को दे देनी चाहिए। जो स्वयं सम्मिलित न हो सकें, वे यदि '**व्यवस्थापक, श्री विश्वनाथ मन्दिर, पो. शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखंड**' को पत्र द्वारा अपनी इच्छा सूचित कर देंगे, तो उनके नाम से भी पूजा की जायेगी। **दिव्य जीवन संघ**

आत्मिक शक्ति

व्यक्ति में सभी क्षमताएँ विद्यमान हैं; उसमें ज्ञान है, उसके अन्दर शान्ति है, पवित्रता है। उसमे अपार शक्ति निहित है। वह निज-स्वरूप पहचान कर, अपनी चेतना को उस पर स्थापित करके जो भी कार्य करेगा, वह पूर्ण तथा सफल होगा। आत्मा के अन्दर से जो शक्ति निकलती है, उसके सम्मुख संसार की ऐसी कोई भी भौतिक शक्ति नहीं है, जो उस आत्मिक शक्ति पर विजय प्राप्त कर सके, अधिकार प्राप्त कर सके। ह्नह्नस्वामी चिदानन्द

आप हैं आनन्द और शान्ति के आगार

परमात्मा के सागर की हम एक लहर हैं। सूर्य के प्रकाश की हम एक किरण हैं। हम इनसान नहीं हैं, यह शरीर इनसान है और मन तो इनसान क्या, शैतान है। हम इन दोनों से अलग हैं। हम आत्मा हैं। किसी ने मानो कटोरे में चन्दन को घिस कर भरा हुआ है। इसके मायने क्या हैं? कटोरा सुगन्ध से भरा है। मैं आत्मा हूँह्नह्नयदि आपने ऐसा समझ लिया, तो जिस तरह चन्दन से सुगन्ध ही निकलती है, मधु से मिठास ही निकलती है, उसी तरह आपसे शान्ति ही निकलनी चाहिए, आनन्द ही बाहर निकलना चाहिए। ह्नह्नस्वामी चिदानन्द

सूचना

जो भक्त शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश में प्रवास करने की अवधि में बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री अथवा यमुनोत्री धाम या अन्य किसी स्थान की यात्रा करने का कार्यक्रम बना रहे हैं, उनसे निवेदन है कि वे शिवानन्द आश्रम द्वारा आवंटित कमरों को खाली करके उनकी चाभियाँ स्वागत-कक्ष में या भवन के अभिरक्षक को सौंपने के बाद ही यात्रा करने हेतु प्रस्थान करें। इससे हमें अन्य अतिथियों/भक्तों को आवास प्रदान करने में सुविधा होगी।

महासचिव

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय